IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्य: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में घटते नैतिक मूल्य व संस्कार एक अध्ययन"

Sangeeta Samadhiya

परिचय-श्री रामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास जी का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ रहा है। समूचे विश्व साहित्य में यह रामचरितमानस अनुपम कृति एवं सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में गिना जाता है। रामचरितमानस महाकाव्य है क्योंकि उसमें संयत संगठित कथा -प्रवाह और विशिष्ट चारित्रिक रेखाओं के उभार हैं। मानस की मूल कथा प्रभु श्री राम के जीवन और चरित्र की कथा है। इस कथानक के महाकाव्योचित संगठन में गोस्वामी जी ने कथा प्रसंग के नियोजन के साथ विभिन्न कथाओं एवं कथनों के पूर्वापद संबंध को भी निभाया है। रामचरितमानस का कथानक स्वयं में महान है क्योंकि इसमें जीवन यात्रा के इतने मोड और विभिन्न परिस्थितियों आती हैं कि मनुष्य इसे सामान्य रूप से पढ़कर अभिभूत हो जाता है और इनसे प्रेरणा लेकर अपने अंतःकरण में भी वैसी ही श्रेष्ठाएं धारण करता है। इस उद्देश्य को ही सामने रखकर श्री राम के जीवन के हर पक्ष को सुग्राह्य शैली में अवधी भाषा में घर घर पहुंचाया है। श्री रामचरित्र एक समुद्र की तरह से है; उसमें सभी कुछ मूल्यवान है, फिर भी आज की आवश्यकता के अनुरूप एवं उपयोगी उसमें ऐसा क्या है, जिसे साधारण से साधारण व्यक्ति भी उतारना चाहे तो उतार सके। श्री राम का जीवन मर्यादाओं का बहुत प्रस्तुतीकरण है, जो परिवारिकता का, बंधुत्व का, दांपत्य जीवन का एवं एक लोकनायक का आदर्श हमारे समक्ष रखता है। वे पुरुषोत्तम इसलिए कह गए कि लीला पुरुष होते हुए भी, साधारण मानव की तरह जीते हुए भी, वे उत्तम पुरुष जैसा आचरण करते देखे जाते हैं, जो हर भारतीय को अंततोगत्वा उद्देश्य है। "जीवो ब्रह्मोव नापरः" जीव ब्रह्म के समक्ष बनाने की पात्रता रखता है एवं पुरुष पुरुषोत्तम लघु से महान बन सकता है, यदि वह मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन के आदर्शों को अपने समक्ष रखें।

प्रातःकाल उठि कै रघुनाथा ।मातु-पिता गुरु नावहिं माथा ।।

अनुज सखा सन भोजन करहीं ।मातु-पिता आज्ञा अनुसरहीं ।।

प्रातः काल माता-पिता और गुरु के चरण छूने की मर्यादा आदि काल से भारतीय संस्कृति के पारिवारिक जीवन का प्रमुख अंग बनी रही । परिवार में एकता, आत्मीयता और एक दूसरे के प्रति प्रेम और त्याग की भावना के विकास में चरणस्पर्श की छोटी-सी प्रक्रिया से आश्चर्यजनक सहयोग मिलता था । कुल और जाति में जो भाव बड़े-बड़े उपदेशों से सम्भव नहीं हो पाते वह बचपन से माता-पिता के चरणस्पर्श से उत्पन्न हो जाते थे । राम-लक्ष्मण के भारी त्याग का प्रशिक्षण यहीं से हुआ था । दुःख की बात है कि पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में हमने अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं को दरकिनार कर हम पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध में अपना अस्तित्व खो रहे हैं इसका सीधा असर आने वाली पीढ़ी और बच्चों पर पढ़ रहा है लेकिन हम अपनी गलतियों को नजर अंदाज कर बच्चों की अनुशासनहीनता और संस्कारों की बातें करते हैं।

प्रस्तावना–श्री रामचरितमानस का अर्थ है 'भगवान श्री राम के जीवन और कर्मों की झील'। यह गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा लिखित एक महान शास्त्र और काव्यात्मक महाकाव्य है। रामचरितमानस सिर्फ एक कथा वस्तु नहीं है, यह दार्शनिक और भक्ति दोनों तत्वों के संयोजन के कथात्मक दृष्टान्तों में प्राचीनतम सनातन धर्म की शिक्षा, नीति, संस्कार, मानवीयता आदि को प्रस्तुत करता है।

श्रीरामचरितमानस एक ग्रंथ ही नहीं, अपितु समूचे मानव जीवन का आधार है। मानव जीवन में वास्तविक मूल्यों की स्थापना के लिए मानस का अध्ययन और उसके आदर्शों को आत्मसात करना प्रत्येक मनुष्य के लिए परमावश्यक है। जीवन में मानवीय मूल्यों की स्थापना आवश्यक है। यह मानवीय मूल्य मनुष्य को मानस के अध्ययन से प्राप्त होते हैं। मानव जीवन के आधार के रूप में श्रीरामचरित मानस को अंगीकार करें। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने अपने सरल स्वभाव से मनुष्य मात्र को सरल जीवन जीने की कला सिखाई है।

रामचरितमानस और नैतिक मूल्य –श्री रामचरितमानस में श्रीराम को भगवान विष्णु के अंशावतार के रूप में दर्शाया गया है। राम के कार्यों को दुनिया में बुराई को दूर कर धर्म की स्थापना करने का सही मार्ग बताया गया।

श्रीराम का जीवन पवित्र है। चरित्र की प्रधानता का उल्लेख रामचरित मानस में है। मनुष्य अगर अपने जीवन में श्रीराम के पावन चरित्र को उतारता है तो उसका जीवन धन्य हो जाता है। रामचरित मानस जीने की कला सिखाती है। उन्होंने कहा कि रावण के विनाश का कारण उसका चरित्र था।

भारतीय संस्कृति – भारतीय संस्कृति सनातन एवं प्राचीन है। भारत को विश्व का आध्यात्मिक गुरु भी कहा जाता है। हमारी संस्कृति, हमारे दर्शन एवं आध्यात्मिक चिंतन जिन मूल्यों को बताता है, आज उन मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति के मूल्य व्यक्ति को वास्तविकता का अनुभव कराते हैं, जबकि इसके विपरीत भौतिकवादी पाश्चात्य संस्कृति के मूल्य व्यक्ति को अंधेरे में भटकते हुए छोड़ देते हैं। आज पाश्चात्य संस्कृति की भौतिकवादी चकाचौंध से ग्रस्त भारतीय अपने सनातन संस्कृति को छोड़कर उसके पीछे भागे जा रहे हैं।

राष्ट्र की चहूं मुखी प्रगति में नैतिक मूल्य व जीवन में अनुशासन का विशेष महत्व है। वही राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है, जिसके नागरिक अपना जीवन, धारा की ओर दृष्टिपात करें तो पाएंगे कि आज नागरिकों में नैतिक मूल्यों का ह्रास, स्वार्थपरता, बेईमानी आदि अनेक दुर्गुणों का विकास होता जा रहा है। हिंसा व अराजकता की जननी मूल्यों का ह्रास होना ही है।

सच्चे अर्थों में मूल्य आधारित जीवन ही वास्तविक जीवन है, लेकिन यह बेहद अफसोस की बात है कि आज समाज, परिवार, विद्यालयों आदि में मानवीय मूल्यों का हाल एक गंभीर समस्या बनी हुई है। इसलिए आज शिक्षा द्वारा मानवीय मूल्यों, अनुशासनात्मक जीवन की भावना का विकास करने की आवश्यकता है। अनुशासन हीनता से दूर रहकर एवं मानवीय मूल्यों को आत्मसात कर छात्र राष्ट्र के अभ्युदय में अपना योगदान दे सकेंगे।

जीवन में मूल्यों का सर्वाधिक महत्व होता है, किंतु मूल्य 1 दिन में सीखने या सिखाने का गुण नहीं है। इसे आदत में डालना होता है।

प्राथमिक विद्यालय से ही छात्र अपनी आदतों को परिवार, समाज व राष्ट्र के अनुकूल व्यवहार में सम्मिलित करके ही युवा होने पर आदर्श समाज के सामाजिक उत्थान की कल्पना की जा सकती है।

नैतिक शिक्षा का अर्थ – ज्ञानार्जन के द्वारा संस्कारों एवं व्यवहारों का निर्माण करना है शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य बालक के मानवीय गुणों का विकास करके उसे उस योग्य बनाना कि वह मानव संस्कृति एवं समाज को अत्यधिक सुंदर व सुदृढ़ बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकें। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है प्राचीन काल में मानव समाज शिक्षा, मुरली जैसे शब्दों से अनजान थे, जैसे–जैसे मानवीकरण की भावना का विकास हुआ इसी आदि मानव ने समाज की आवश्यकता महसूस की तथा शिक्षा एवं मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया

क्योंकि शिक्षा और उसमें निहित उद्देश्य मानव को समाज में प्रतिष्ठित स्थान क्षेत्र प्रदान करती है। शिक्षा व मूल्य समाज में ही फलती फूलती है तथा समाज भी शिक्षा और उसमें समाहित उद्देश्य की छाया में अपने को प्राणवान, गतिशील, समाज व सुसंस्कृत बनाता है। वर्तमान समय में इन सभी मूल्यों का अभाव है जैसे अनुशासन, कर्तव्य- ज्ञान, बड़ों का आदर-सम्मान आदि।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1967) के अनुसार शिक्षा द्वारा आर्थिक सामाजिक स्थिति का विकास करना है। जिससे बालकों के अंदर नेतृत्व आध्यात्मिक मूल्यों का विकास किया जा सके।

वर्तमान में बदलते नैतिक मूल्य -किसी भी व्यक्ति का व्यवहार उसके मूल्यों का प्रतिबिंब होता है। मूल्य विहीन जीवन अर्थहीन जीवन के समान है। मूल्य निर्माण में समाज व परिवेश को अद्वितीय स्थान प्राप्त है, क्योंकि व्यक्ति समाज निरपेक्ष होकर जीवन निर्वाह नहीं कर सकता।

आज की युवा पीढ़ी तो किसी पागल हाथी की तरह नैतिकता व संस्कारों को भुलाकर अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को बेख़ौफ़ रौंदते हुए चली जा रही है। उन्हें इस बात की चिंता ही नहीं है कि जब भी हम जमीन पर गिरेंगे तो हमारा क्या हाल होगा। यह सिर्फ नैतिक मूल्यों की कमी या मूल्य के पतन के कारण ही हो रहा है।

जिस महान भारत भूमि पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, अर्जुन, विवेकानंद, भगत सिंह, रानी लक्ष्मी बाई व महात्मा गांधी जैसे महान विभूतियों का जन्म हुआ है आज उसी धरा से शिष्टाचार, नैतिकता व संस्कार खोते जा रहे हैं। संस्कार हमें सफलता की ऊंचाइयों तक ले जाते हैं। जब हम अपने आदर्श, संस्कार व उद्देश्य भूल जाते हैं तो असफलताएं ही हाथ लगती हैं। कड़वा सच यह है कि आज के युवाओं को संस्कार, आदर्श व सिद्धांत का पता ही नहीं है। अगर ईमानदारी से सोचें तो अनैतिकता व अशिष्टता को बच्चा फैलाने वाले कोई और नहीं अपितु हम ही हैं। उनको सहेजने , सुधारने के लिए भी हमें ही कदम उठाने होंगे।

निष्कर्ष -- अपने बच्चों को अच्छे संस्कार व शिक्षा देना चाहिए । बच्चा कोरे कागज की तरह होता है उस कोरे कागज पर संस्कारों, नैतिक मूल्यों व शिष्टाचार की तहरीर लिखना हमारा फ़र्ज़ है। अभी भी समय है और आज से ही हमें शपथ लेनी होगी कि युवाओं पर दोष मढ़ने के बजाय बच्चों को संस्कार, नैतिक मूल्य व शिष्टाचार को सिखाएं।

इसकी शुरुवात हमें संयुक्त परिवार में रहकर स्वयं ही शुरू करनी होगी। लेकिन जब बच्चा अपने दादा-दादी के साथ रहता है तो वह इन सारी बातों को स्वतः ही सीख जात है अपने से बड़ों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए। आज के समय में एक छोटा बच्चा जब अपने माता-पिता को स्वार्थ पूर्ति हेतु किसी भी हद तक गुजरा हुआ देखा है तो वह उनसे वही सिखता है। लेकिन जब बच्चा अपने दादा-दादी के साथ रहता है तो वह इन सारी बातों को स्वतः ही सीख जाता है।

हमारी संस्कृति व धार्मिक विचारों को विदेशी अपना रहे हैं वही हम अपनी सर्वश्रेष्ठ संस्कृति को छोड़कर उसे भेड़चाल के अनुगामी हो रहे हैं जिसका ना आदि है ना अंत। हम बस स्वयं को भूलकर उसे अनजान राह पर दौड़ रहे हैं जो हमें ही समाप्ति की ओर ले जा रही है। स्वयं के अस्तित्व को बचाने के लिए संस्कृति से जुड़ना परम आवश्यक है। वर्तमान में यदि हमने इस बात को नहीं समझा तो भविष्य में बच्चे अपनी संस्कृति संस्कारों को नहीं समझ पाएंगे। हमें अपने कल को सुधारने के लिए आज को बदलना होगा।

कुछ पंक्तियां ....

बच्चों के भविष्य को सुधारने के लिए हमें वर्तमान को बदलना होगा।

विद्यार्थियों को सीखने से पहले स्वयं को सीखना होगा।

बच्चे अपना आदर्श माता-पिता और शिक्षक को समझते हैं।

जैसा हम करते हैं वैसा बच्चे सीखते हैं,

इसलिए पहले स्वयं की विचारधारा को बदलना होगा।

भुलावे की संस्कृति को छोड़कर अपनी संस्कृति को अंगीकार करना होगा।

हम बदलेंगे युग बदलेगा इस विचारधारा को स्वीकार करना होगा।

छात्रों की अंतरात्मा में संस्कृति के बीच प्रस्फुटित करना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

१-गोस्वामी तुलसीदास (1965), श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर।

२- रैना, शीला (2015), श्रीरामचरितमानस व रामावतार चरित का तुलनात्मक अध्ययन।

३-भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व-पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

४-पटेल, प्रफुल्ल एम. (2013), श्रीरामचरितमानस का वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।

५-चक्रवर्ती बी. (1991), रामचरितमानस में मानव मूल्य।

६- सिंह अमिता रानी, रामचरितमानस में जीवन मूल्य

७-मर्यादा पुरुषोत्तम राम-पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

८-चरणदास शर्मा, तुलसीदास के काव्य में नैतिक मूल्य।